''सांख्यवर्णित सृष्टि–प्रक्रिया में बिम्ब विधान''

प्रियंका राय

बिम्ब शब्द अंग्रेजी भाषा के प्ज्ंहम (इमेज) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अर्थ है किसी पदार्थ को मूर्तता प्रदान करना, चित्र बद्ध करना, प्रतिबिम्बित करना या मानसिक प्रकृति निर्मित करना। जे0टी0 शिप्ले ने बिम्ब (प्ज्ंहम) के दो अर्थ लिये एक अलंकार और दूसरा अनुभूति की ऐन्द्रिय अभिव्यक्ति। अर्थात् वेदानुसारी सम्यग्ज्ञान ही सङ्ख्या है, उसमें जिनकी स्थिति है, वे साङ्ख्य कह जाने योग्य हैं।

यह सृष्टि, प्रकृति से महत्, उससे अहंकार, अहंकार से एक ओर तो एकादश इन्द्रियॉ और दूसरी ओर पॉच तन्मात्र तथा तन्मात्रों से पृथ्वी, जल इत्यादि पांच महाभूत– इसी क्रम से होती है।

सांख्य दर्शन में प्रतिपादित सृष्टि की प्रक्रिया में प्रकृति और पुरुष दोनों सम्यक रूप है। इनमें से किसी एक के अनुपस्थित रहने पर सृष्टि प्रक्रिया सम्भव नहीं है। अतः यह सृष्टि–प्रक्रिया प्रकृति और पुरुष के बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव को द्योतित करती है।